Highlights of Media bite 21 October, 2020

Prof. Gourav Vallabh, Spokesperson AICC addressed the media at AICC Hdqrs., today.

प्रो. गौरव वल्लभ ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी को शारदीय नवरात्रि की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। नवरात्री का आज पांचवा दिन है, स्कंदमाता हम सभी पर अपनी दया बनाए रखें।

आज की स्पेशल वार्ता का आयोजन एक बहुत महत्वूपर्ण मुद्दे के लिए रखा है और यह है कि किस तरह रेलवे के भाड़े और त्योहारों के दिनों में रेल के भाड़े किस तरह बढ़ाए जा रहे हैं, उसके बारे में एक विस्तृत प्रेस रिलीज भी हम देंगे। पर ध्यान रहे भारतीय रेलवे एक ऐसा ट्रांसपोर्ट का साधन है, जिससे आम भारतीय अपने एक जगह से या नौकरी वाली जगह से अपने होम टाउन तक जाता है और आज जब अगले डेढ़ महीने में देश के सारे प्रमुख फेस्टिवल हैं, भले ही वो दुर्गा पूजा हो, भले ही वो दशहरा हो, भले ही वो दीपावली हो, भले ही वो छठी मईया की पूजा हो, जब देश में बड़े लेवल पर लोग बड़े महानगरों से अपने गांव जाते हैं, अपने छोटे कस्बों में जाते हैं, तो हमने देखा कि किस तरह दिल्ली, मुंबई से लोग बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, बंगाल, महाराष्ट्र से लोग बंगाल, मुंबई, पटना किस तरह बड़ी संख्या में जाते हैं। तो रेलवे ने एक स्पेशल 392 ट्रेनें चलाने का काम किया, अच्छी बात है, उसमें कोई गलत बात नहीं है, पर आपको जानकर आश्चर्च होगा कि जो ये 392 ट्रेन जो 20 अक्टूबर से 30 नवंबर के बीच चलेगी, उनमें आम ट्रेनों से 25 से 30 प्रतिशत ज्यादा भाड़ा है और ज्यादा उसमें बढोतरी सैंकड़ क्लास स्लीपर में है। उसमें सैंकड़ ए.सी. में बढ़ोतरी ज्यादा नहीं है, सैंकड़ ए. सी. क्लास में 23 प्रतिशत होगी, तो सैंकड़ क्लास स्लीपर में 30 प्रतिशत होगा।

हमने एक सोर्स से डेटा निकाला, उसके अनुसार अगर आप पटना से दिल्ली स्लीपर क्लास में जाते हैं, तो 510 रुपए भाड़ा है और जो ये स्पेशल सो-कोल्ड फेस्टिवल ट्रेन हैं, भारत सरकार ने जो 392 ट्रेनें चलाने का काम किया, उसमें भाड़ा 650 रुपए, 510 रुपए से 650 रुपए, ये बढ़ोतरी है। वैसे ही पटना से अगर मुंबई स्पीकर क्लास का भाड़ा 670 रुपए है, आम दिनों में आम ट्रेन में तो ये फेस्टिवल स्पेशल में 920 रुपए है। जब जीडीपी -23.9 प्रतिशत से संकुचन कर रही है, जब कोरोना में 2 करोड़ 10 लाख सैलरीड़ क्लास लोगों ने अपना रोजगार खोया है, जब हर सेक्टर में या तो सैलरी कट की खबर आ रही है या जोब लॉस की खबर आ रही है, उस समय लोगों की अपेक्षा ये रहती है कि सरकार लोगों के हाथों में पैसा दे और ये एक ऐसी सरकार है, जो फेस्टिवल में लोगों के हाथ से पैसा ज्यादा खींच रही है। ये कौन सी आत्मनिर्भरता है, ये कौन सा न्यू इंडिया है? हम तो इसे यही कहेंगे कि जिस व्यक्ति के घर में नौकरी गई है या जिस व्यक्ति ने अपने सैलरी कट को देखा है, उनके जख्म पर नमक लगाने जैसा काम ये सरकार कर रही है और उस समय जब मुख्य मध्यम आय वर्गीय और निम्न आय वर्गीय लोग, मेहनत करने वाले लोग बड़े शहरों से अपने गांव की ओर जाते हैं और बड़ी मात्रा में जाते हैं, उन पर आप 30 प्रतिशत ज्यादा चार्ज कर रहे हैं।

एक और अनुमान देता हूं, जैसे पटना से बेंगलुर का एक तरफ का भाड़ा 910 रुपए है, वो इन स्पेशल ट्रेन में 1,095 रुपए है और ना केवल ये स्लीपर में है, थर्ड एसी में भी बढ़ोतरी है, सैंकड एसी में, पर स्लीपर में दयालु ज्यादा है सरकार, उसमें बढ़ोतरी प्रतिशत मैक्सिमम किया गया है। तो ये 25 से 30 प्रतिशत का स्पेशल फेस्टिवल बोनांजा किसके लिए है, ये क्या चाहती क्या है सरकार कि लोगों के हाथ में पैसा देने की बजाए जो पैसा है, उसको खींचने का काम कर रही है?

इस संदर्भ में हम मांग करते हैं कि सरकार देश को बताए कि ये जो 25 से 30 प्रतिशत आप जो भाडा ज्यादा ले रहे हैं, इसके पीछे आपका क्या मन्तव्य है?

हम मांग करते हैं कि सरकार देश को बताए कि जब सारे सेक्टर में जोब लॉस हो रही है, रिट्रेंचमेंट हो रहे हैं, मैसिव रिट्रेंचमेंट हो रहे हैं, इकोनॉमी दुनिया के सबसे बड़ी कॉन्ट्रैक्शन की इकोनॉमी बन चुकी है। CRISIL की एक रिपोर्ट के अनुसार एशिया पैसिफिक की सारी इकोनॉमी में -3 प्रतिशत का कॉन्ट्रैक्शन है, भारत की इकोनॉमी में -13 प्रतिशत है और यहाँ पर मैं भारत की तुलना अमेरिका से नहीं कर रहा हूं, जो माननीय करते हैं कई बार, वो नहीं कर रहा हूं। मैं भारत की तुलना उन्हीं देशों से कर रहा हूं, जो भारत जैसे हैं, जहाँ पर डेमोग्राफी भारत जैसी है, जहाँ पर इकोनॉमी का स्ट्रक्चर भारत जैसा है, उनसे तुलना कर रहा हूं। आज दुनिया की बड़ी से बड़ी इकोनॉमी आप एक इकोनॉमी बता सकते हैं, जिसके क्वार्टर वन में – 23.9 प्रतिशत का कॉन्ट्रैक्शन हुआ है? आप नहीं बता पाएंगे और उस कॉन्ट्रैक्शन के बावजूद ये एक दूसरी सौगात है कि आपको अपने घर जाना है, तो आपको 30 प्रतिशत ज्यादा भाड़ा देना पड़ेगा।

हम मांग करते हैं और मैं इस पटल से कांग्रेस पार्टी की ओर से मांग करता हूं कि लोगों को आज ज्यादा पैसे देने की जरुरत है, उनके हाथों से पैसे खींचने की जरुरत नहीं है। तुरंत आप इस फैसले को रोल बैक करो और ये जो 30 प्रतिशत, 32 प्रतिशत, 27 प्रतिशत का भाड़ा है, बढ़ोतरी है स्पेशल ट्रेन के नाम पर इस निर्णय तो तुरंत रोल बैक कीजिए।

Prof. Gourav Vallabh said - The government in its recent decision has approved 196 pairs or 392 trains to cater to the festival rush. These trains will be operating from 20th October till 30th November for festivals such as Durga Puja, Dussehra, Diwali and Chhatt Puja.

Railways in India has always been symbolic of the common man and has been called the backbone of Indian travel landscape for a reason. It is because it has the potential to help the common man travel without a deep burden to his pockets. On top of that, COVID-19 has dealt a severe blow to the earnings of many. These festivals are the only thing people are looking up to in order to spread happiness and enjoy with family. But the Government seems to be ignorant of its role of supporting people in enjoying the festivities. Instead, the fares are on average 25-30 percent higher in festival special trains being operated.

Here are the amounts being charged for these Festival Special Trains to and from Patna Junction:

Place	Sleeper		3 AC		2 AC	
	Special	Festival Special	Special	Festival Spcl.	Special	Festival Spcl.
New Delhi	510	650	1300	1710	1910	2320
Mumbai	670	920	1795	2315	2600	3225
Bengaluru	910	1095	2355	2745	3435	3885
Sikandarabad	745	845	1945	2205	-	-
Howrah	350	435	915	1165	1280	1615

- With millions of people having lost jobs in the last few months, the government instead of providing festival stimulus has decided to further pull the common man down

- In summary, the fares are on an average 25-30 percent higher in festival trains being operated

- There is no reason to increase the fares in current times. On the contrary, these fares should have been subsidized heavily

- Does the Government want to push even the Railways out of access of the common man?

We have two specific questions for the government:

1. **What is the rationale of the government in increasing fares to the extent of 25 to 30 percent?**

2. **When across sectors, there are massive retrenchments and salary cuts, GDP growth for Q1 FY21 is at -23.9 percent, at this point of time, instead of giving money in the hands of the people, why is the government taxing the common man further?**

We demand the Government to roll back these increased fares immediately and subsidize it further so that rail travel becomes accessible to the common man and their festive travel doesn't lend a deep hole to their pockets.

रेलवे के बढ़े हुए किराए को लेकर पूछे एक प्रश्न के उत्तर में प्रो. वल्लभ ने कहा कि ये आपने बहुत अच्छा सवाल पूछा और इससे क्लेरिटी और भी आ जाएगी। मैंने 25-30 प्रतिशत जो बढ़ोतरी बताई है, वो स्पेशल ट्रेन्स के ऊपर है, इनमें। आम दिनों की ट्रेन में अगर देखें तो वो 35-40 प्रतिशत

है। तो जो स्पेशल ट्रेन का भाड़ा जो मैंने बोला, जैसे पटना से दिल्ली का स्पेशन ट्रेन का भाड़ा 510 रुपए है, तो आज जो फेस्टिव स्पेशल ट्रेनों की जो बातें हो रही हैं, जिनमें 392 ट्रेनें हैं, उनका भाड़ा 650 हो गया है। तो मैं जो कम्पैरिजन कर रहा हूँ, वो फेस्टिव ट्रेन और स्पेशल ट्रेन और फेस्टिव स्पेशल ट्रेन्स का ही कर रहा हूँ, मैं आम दिनों की ट्रेन से नहीं कर रहा हूँ।

श्री राहुल गांधी के वायनाड दौरे के दौरान उनसे मिलने वाले व्यक्तियों के संदर्भ में पूछे गए एक अन्य प्रश्न के उत्तर में प्रो. वल्लभ ने कहा कि श्री राहुल गांधी पिछले तीन दिन से अपने कॉन्स्टीट्यूएंसी में हैं। वो वहाँ पर कोविड रिलीफ का जो कार्य चल रहा है, किस तरह कोविड की महामारी को टैकल किया जाए, उसके बारे में उन्होंने कई मीटिंग्स भी की, जिला प्रशासन से भी बात की, आम लोगों से भी बात की और आज अंतिम दिन उन्होंने जो भी लोग उनसे मिलना चाहते थे, अपना ज्ञापन देना चाहते थे, उन्हें एक अवसर प्रदान किया, इस अवसर में कप्पन परिवार जिनकी आप बात कर रहे हैं, उनके परिवार के लोग भी उनसे आकर मिले, उन्होंने अपनी बात कही, पर मुख्य मुद्दा क्या है- मुख्य मुद्दा ये है कि जब तक बिहार के चुनाव नहीं होंगे, तब तक तनिष्क भी आएगा, तब तक कप्पन परिवार के मुद्दों को भी आप उठाएंगे, तब तक नित्यानंद राय भी जाकर बिहार जाकर ये बोलेंगे कि अगर यहाँ पर कोई दूसरी सरकार बन गई, तो कश्मीर के आतंकवादी बिहार आ जाएंगे, कैसे आएंगे, वो नहीं बताया राय साहब ने। तब तक वो ये भी बोलेंगे कि मदरसों में क्या हो रहा है, तब तक ये भी बोलेंगे कि अब मथुरा में हम ये भी करेंगे, 7 तारीख तक ये सब देश को सहना पड़ेगा, मुझे तो आदत है। कल जैसे प्रधानमंत्री जी राष्ट्र को संबोधित कर रहे थे, राष्ट्र के संबोधन और मन की बात में ज्यादा अंतर नहीं रहा है, क्योंकि उसकी फ्रिक्वैंसी मन की बात से ज्यादा हो चुकी है, तो कल जब वो राष्ट्र को संबोधित कर रहे थे, ये सारी बातें आनी हैं। मुख्य मुद्दा क्या है? मुख्य मुद्दा ये है कि 2 करोड़ 10 लाख युवाओं ने, नौकरीपेशा सैलरीड क्लास लोगों ने अप्रैल से अगस्त माह के बीच अपनी नौकरी खोई है। उस पर सरकार के किसी आदमी ने उस पर बात की? मुख्य मुद्दा ये है कि इस दुनिया में सबसे नीचे गिरती हुई इकॉनोमी को कैसे ऊपर लाया जाएगा, क्या कभी किसी ने ये सरकार की ओर से उस पर किसी ने बात की? मुख्य मुद्दा ये है कि महिलाओं के साथ जिस तरह का दुराचार होता है, हर जगह हो रहा है, उत्तर प्रदेश में हो रहा है, बिहार से लगातार घटनाएं आ रही हैं, उन्हें कैसे रोका जाए, उसके बारे में क्या नीतियाँ बननी चाहिएं, उसके बारे में किसी ने कोई बात की? अब फैडअप हो गए हैं, ये बहुत ओल्ड एक ही बहाना, जैसे आपको कोई क्लास मिस करनी है, तो आप रोज यही कहेंगे कि मेरा पेट दर्द रहा है, तो उस पर डाउट होने लगता है, वही चीज ये सरकार कर रही है। तनिष्क का मुद्दा भी आ जाता है, बिहार चुनाव के पूर्व कश्मीर के आतंकवादी बिहार आ जाते हैं, बिहार चुनाव के पूर्व । मैं उनसे पूछना चाहता हूँ राय साहब से कि उनके जब होम मिनिस्टर

साहब, अमित शाह जी, पिछले बिहार चुनाव में बोले थे कि अगर राजद और नितीश कुमार जी की सरकार बन जाएगी, तो पाकिस्तान में पटाखे छुटेंगे, छूटे थे क्या? क्योंकि बनी तो थी, और उन्हीं नितीश कुमार जी के साथ आपने भी तीन, साढ़े तीन साल सरकार चलाई है, तो छूटे थे क्या? तो इन मुद्दों से पेट नहीं भरता है, इन मुद्दों से बात नहीं बढ़ती है। मैं तो आपका सवाल लेने को तैयार हूँ, कोई उनकी तरफ से इन सवालों का जवाब दे सकता है कि जो सज्जन सपा से आए हैं, जिनका जिक्र किया, उनसे कभी पूछना कि 2 करोड़ 10 लाख लोगों को वापस रोजगार कैसे मिलेगा, इसके बारे में आपकी क्या राय है? दुनिया में सबसे नीचे गिरती हुई अर्थव्यवस्था को ऊपर कैसे लाया जाएगा, इसके बारे में आपकी क्या राय है? कोविड मे सबसे ज्यादा एशिया पैसिफिक में फैटलिटी रेट, मृत्यु दर भारत में है, उसके बारे में आपकी क्या राय है? आप फैटलिटी रेट की तुलना करते हो अमेरिका से, अमेरिका की डेमोग्राफी और भारत की डेमोग्राफी अलग है। Average of person in India and US are different things. आप उनसे अगर कंपेयर करते हो तो ये क्यों भूल जाते हो कि अमेरिका की और भारत की जो प्रति मिलियन टैस्टिंग दर है, उसमें 7 गुना का अंतर है। अमेरिका में भारत से 7 गुना ज्यादा प्रति मिलियन टैस्टिंग हुई है। तो आप उतनी टैस्टिंग कराओ फिर फैटेलिटी रेट की बात करेंगे।

जब आप ये बात करते हो, मैं कांग्रेस के पटल से ये पूछना चाहता हूँ, मैं तो अपनी सरकार के साथ खड़ा हूँ, मुझे तो मेरी सरकार के डाटा पर पूरा विश्वास है, पर प्रधानमंत्री जी के परम मित्र डोनाल्ट ट्रंप को मोदी सरकार के डाटा पर विश्वास नहीं है और वो पब्लिकली कहते हैं कि भारत का कोविड का डाटा गलत है, झूठा है। मैं तो बोलता हूँ कि मैं तो मेरी सरकार के साथ हूँ, मैं तो बोलता हूँ कि अमेरिका के राष्ट्रपति झूठ बोलते हैं, पर हमारी सरकार की तरफ से कोई नहीं बोलता है। इन मुद्दों पर उत्तर चाहिए देश को, इन मुद्दों पर नीतियाँ चाहिए देश को। तो तनिष्क, सीएए, कश्मीर के आतंकवादी बिहार आ जाएंगे, मदरसे, मथुरा, इन चीजों से फैड अप होकर देश ने भी देख लिया कि आपका कोई मंतव्य नहीं है। न तो आपकी नीति साफ है, न आपकी नीयत साफ है। न धर्म के रास्त पर चलते हो, न राम के रास्ता पर चलते हो, आपका सिर्फ एक ही रास्ता है, लोगों को लड़ाओ और सत्ता हासिल करो, वो रास्ता अब हिंदुस्तान की जनता आपको देने को तैयार नहीं है।

Sd/-
(Dr. Vineet Punia)
Secretary
Communication Deptt,
AICC